शोध पत्र- इतिहास

राजस्थान में जन-जागरण का अग्रदूत- 'प्रजासेवक'

* भगवान सिंह शेखावत ** डॉ. रामचन्द्र रूण्डला

* - ** व्याख्याता, बाबा भगवानदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिमनपुरा

December,2012

राजस्थान में मिशनरी पत्रकारिता का सूत्रपात ऐसे पत्रों से हुआ जिनके जनक सही अर्थों में विभिन्न भागों में प्रारम्भ हुए जन आंदोलनों के प्रणेता थे। सांमतवाद की अन्यायपूर्ण नीतियों एवं कार्यों के विरूद्ध नागरिक अधिकार तथा गरिमा की रक्षा के लिए साहसी पत्रकारों ने नेतृत्व प्रदान किया। यहाँ पर सन् 1920 के बाद जो पत्र-पत्रिकाएँ शुरू हुई वे स्वातंत्र्य भाव से ओत-प्रोत थी। उनका उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक जनजागृति था। विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी, हरिभाऊ उपाध्याय, बाबानरसिंहदास, ऋषिदत्त मेहता, जगदीश प्रसाद माथुर, शोभालाल गुप्त, युगल किशोर चतुर्वेदी, गोकुल लाल असावा, जयनारायण व्यास आदि विभिन्न स्वाधीनता सेनानियों ने पत्रकारिता के माध्यम से ही जन-आंदोलनों को आगे बढ़ाया।[1]

पत्रकारिता की इस गौरवशाली परम्परा में 'प्रजासेवक' का प्रकाशन राजस्थान के पत्रकारिता इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस पत्र ने अपने निष्पक्ष समाचारों, तीखी एवं बेबाक टिप्पणियों तथा प्रमाणिक लेखों के कारण प्रदेश के साप्ताहिक पत्रों में अपना विशिष्ट स्थान तो बनाया ही, अल्प अवधि में ही प्रांत का लोकप्रिय साप्ताहिक भी हो गया।[2] 'तरूण राजस्थान' एवं 'सैनिक' से पत्रकारिता का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा ने 10 अक्टूबर सन् 1940 को जोधपुर से 'प्रजा सेवक' का प्रकाशन प्रारम्भ किया।[3] यह वह समय था जब मारवाड़ लोक परिषद् का आन्दोलन अपने चरम पर था। 'प्रजा सेवक' के प्रकाशन से बीकानेर रियासत में तो इस कदर हड़कम्प मचा कि वहाँ इसके वितरण पर ही प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन लोग उस पत्र के इस कदर दीवाने थे कि प्रतिबन्ध के उन दिनों में भी बीकानेर रियासत में तस्करी करके इस पत्र को पहुँचाया जाता था। ऊँटों की हादियों में छुपा-छुपाकर यह पत्र एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता था। उस समय श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा 'मामाजी' का एक स्लोगन बहुत लोकप्रिय हुआ करता था। बहुत ही दमदार स्लोगन था यह, जो उस समय तो प्रासंगिक था ही, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उनका यह स्लोगन था-''पत्रकारिता पेट की आग नहीं, आत्मा की आग होती है।''[4]

'प्रजा सेवक' ने जागीरदारों के अत्याचारों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए अपना 'होली विशेषांक' शीर्षक से रेखाचित्र प्रकाशित किया। इसमें मरे हुए मवेशी, कृषकाय किसान तथा रास-रंग में डूबे जागीरदार दिखाए गए थे। भीतरी पृष्ठों में भी जागीरदारों पर कटाक्ष के रूप में तरह-तरह की सामग्री प्रकाशित की गई।[5] 'प्रजा सेवक' ने 'आज का जयपुर : विहंगम दृष्टि' शीर्षक से खबर प्रकाशित करते हुए लिखा कि जनता की आवाज की कोई कीमत नहीं है। प्रजामण्डल ने आंदोलन छेड़ दिया है तथा सीकर में किसान नेताओं को गिरफ्तार किया गया है।[6] पत्र ने भरतपुर में उत्तरदायी शासन की मांग का समर्थन एवं सिरोही के देशभक्त सपूतों का परिचय उनके चित्रों के साथ प्रकाशित किया।[7] तथा रियासतों में मनाए गए स्वतंत्रता दिवस के समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किए गए।[8]

'प्रजा सेवक' ने अपने पहले अंक से ही समाचार एवं लेखों के साथ ही देशभक्ति की कविताओं का प्रकाशन भी शुरू किया ताकि लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो सके।[9] रियासतों में महात्मा गांधी के आह्वान पर छह से तेरह अप्रैल तक मनाए गए राष्ट्रीय सप्ताह पर संपादकीय टिप्पणी के साथ ही पत्र ने मारवाड़ में जिम्मेवार हुकूमत दिवस मनाने, प्रभातफेरियाँ निकालने, सभाएँ करने एवं राष्ट्रीय तराने गाने के समाचार विस्तार के साथ प्रकाशित किए।[10] पत्र ने जहां 'हम कैसा राजा चाहते हैं' शीर्षक से अपने संपादकीय में शासक वर्ग को उसके कर्त्तव्यों के प्रति सजग किया वहीं जहाँ भी शासन सुधार हुए या आवश्यकता महसूस हुई उस बारे में भी बेबाक समाचार एवं टिप्पणियां प्रकाशित की।[11]

'प्रजा सेवक' ने जहाँ सांप्रदायिकता को एक अभिशाप बताते हुए इस बारे में निरंतर लेख प्रकाशित किए, वहीं जागीरी समस्या पर भी तथ्यपरक सामग्री के प्रकाशन के साथ ही वहाँ की जनता एवं जागीरदारों को सजग करने का भी प्रयास किया। पत्र ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता के प्रति जागीरदारों के रवैये को जहाँ शर्मनाक बताया वहीं 'जागीरदारों की दीवाली' शीर्षक से लेखकों ने उनके आचरण पर कटाक्ष भी किए।[12] 'जागीरों में हरिजनों पर लागे' शीर्षक से प्रकाशित लेख में कहा गया कि हरिजनों को जागीरी क्षेत्र में अनेक लागें देनी पड़ती है। इनमें छाजले बांधना, मुड्डे बांधना, तावाण लाग, जूती लाग, चरस पखाल, उबटा लाग, हावड़ी लाग, तीसाला लाग, अहोड़ी लाग, पाता लाग आदि मुख्य हैं जिनसे हरिजनों की हालत चिंतनीय है।[13] पत्र ने जागीरी क्षेत्र की प्रजा पर हो रहे शाषण, अन्याय एवं अत्याचारों का खुलकर विरोध किया एवं लोगों को प्रेरित किया कि वे इसके खिलाफ एकजुट होकर आगे आऐं।

'प्रजा सेवक' ने सेवाग्राम वर्धा से महात्मा गांधी द्वारा अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के महामंत्री जयनारायण व्यास को 14 मई 1941 को लिखे पत्र को अक्षरशः प्रकाशित

किया ताकि समय रहते जागीरदार संभल जाएं। इस पत्र में जागीरी जगत को महात्मा गांधी का यह संदेश था कि –'पहले अपनी तकलीफें जोधपुर सरकार को सुनाओ जब वह न सुने तो जबर्दस्त आंदोलन करो।''[14] पत्र ने जहाँ प्रजामण्डल के कार्यों को जमकर प्रचारित किया, वहीं 'यह देखो' शीर्षक से अलग–अलग रियासतों में हो रहे अन्याय का सजीव वर्णन भी किया।[15] 'प्रजा सेवक' ने कई मुद्दों को आंकडों–तथ्यों के जरिए उठाकर विशिष्ट शैली की शुरूआत की। मारवाड़ की मर्दमशुमारी में पत्र ने समाचार दिया कि यह मर्दमशुमारी उदयराज माथुर एवं इन्द्रनारायण पांडे ने की जिसमें साढ़े चार लाख की वृद्धि दृष्टिगत हुई। 1931 में आबादी 21,25,892 थी जो 1941 में बढ़कर 25,52,795 हो गई। इस मर्दमशुमारी से ज्ञात हुआ कि स्त्री शिक्षा की स्थिति चिंतनीय है। इसी तरह 'जोधपुर का म्युनिसिपिल बोर्ड शहर की भलाई के लिए क्या करना चाहता है' शीर्षक से प्रकाशित समाचार में आय एवं व्यय के आंकडे देते हुए वस्तुस्थिति का सटीक वर्णन किया गया।[16]

'यह देखो राजस्थान' शीर्षक से 'प्रजा सेवक' ने दिलचस्प आंकड़े दिए कि राजस्थान की आबादी 1 करोड़ 35 लाख है। 23 रियासतें, 156 कस्बे, 3 लाख 24 हजार गांव और 20 हजार घर हैं। राजपूताना अजमेर–मेरवाड़ा का क्षेत्रफल 134959 वर्गमील है और चार बड़े शहर हैं। जयपुर की आबादी 1 लाख 76 हजार, अजमेर की 1 लाख 47 हजार, बीकानेर की 1 लाख 47 हजार एवं जोधपुर की 1 लाख 27 हजार है। कुल 27 हजार 627 लोग बेकार हैं।[17] द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब भारत की स्वाधीनता का मसला तेजी से उभर रहा था प्रजा सेवक ने स्वाधिनता की भावना को ओर प्रबल करने के उद्देश्य से जहां 'भारत छोड़ो का शंखनाद फिर गूंज उठा' एवं 'रियासतों का प्रतिनिधि कौन है' शीर्षक से संपादकीय लिखे वहीं मुखपृष्ठ पर सुभाषचन्द्र बोस का चित्र एवं आजाद हिन्द सेना का अभिवादन गीत 'चलो दिल्ली–चलो दिल्ली' और अन्य पृष्ठों पर आजाद हिन्द सेना का इतिहास प्रकाशित किया ताकि जनभावना प्रबल हो।[18]

'प्रजा सेवक' ने विभिन्न रियासतों में चल रहे जन आंदोलनों को खूब प्रचारित किया तथा वहाँ के हालात पर भी खुलकर लिखा। पत्र ने जोधपुर में पण्डित जवाहर लाल नेहरू के जनसभा में दिए भाषण 'जिम्मेवार हुकूमत के लिए अपने को तैयार रखो' शीर्षक से विस्तार से प्रकाशित किया। जैसलमेर के हालात का सजीव चित्रण, 'जैसलमेर की जनता की दुःखपूर्ण कहानी' शीर्षक से प्रस्तुत लेख के तहत किया तो मारवाड़ विद्यार्थी संघ के नेतृत्व में हड़ताल के समाचार के साथ ही आजाद हिन्द सेना के सैनिकों की रिहाई, इण्डोनेशिया से हिन्दुस्तानी फौजों को वापस बुलाने, कलकत्ता गोलीकाण्ड के आरोपियों को सजा देने तथा जोधपुर के द्वितीय बम केस के एक मात्र बंदी जोरावरमल को रिहा करने की माँगों को प्रमुखता से प्रचारित किया।[19] 'प्रजा सेवक' ने हर विषय पर अपनी लेखनी चलाई। खाद्यान्न के संकट के दौर में जहां उसने बदमाश व्यापारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को जोर–शोर से उठाया, वहीं शाहपुरा प्रजामण्डल के अधिवेशन में शेख–अब्दुल्ला के इस बयान को प्रमुखता से प्रकाशित किया–'मैं हर पहाड़, हर जर्रे और हर पत्थर से यह पूछना चाहता हूं कि क्या यही वह राजपूताना है जिसने राणा प्रताप को जन्म दिया और जहाँ की गर्दनें बड़े से बड़े साम्राज्य के आगे नहीं झुकती थी।[20] लोगों को अपने हकों के लिए जागृत करने के उद्देश्य से पत्र ने उसी क्रम में लिखा – 'बांसवाड़ा वह राज्य है जहां प्रगतिशील महारावल और सुधारवादी दीवान के रहते हुए भी भूख और बीमारियों का तांडव हो रहा है।'पत्र ने जोधपुर में संसदीय प्रतिनिधिमण्डल के जोधपुर आगमन एवं कार्यकर्त्ताओं से उसकी भेंट का समाचार प्रमुखता से देते हुए लिखा कि उसकी रियासती समस्याओं में गहरी दिलचस्पी है तथा रेजीडेन्ट सीरेनसन का कहना है कि राजनीतिक दृष्टि से सब रियासतें पिछड़ी हुई हैं जबकि बोरमली का मानना है कि रजवाड़ों में एकतंत्री हुकूमत खत्म होकर रहेगी।[21]

'प्रजा सेवक' ने जागीर प्रथा के खिलाफ खुलकर लिखा कि –'जागीर प्रथा के लिए मौत का घंटा। दुनिया की कोई ताकत अब उसे नहीं बचा सकती। अंग्रेजों भारत छोड़ों, राजाओं प्रजा की ओर देखो, जागीरदारों कमाओ–खाओ, साल भर के भीतर ही महकमा खास पर तिरंगा झण्डा फहराने लगेगा।[22] पत्र ने 'गोपा जी के जेल जीवन की दर्दनाक कहानी' शीर्षक युक्त खबर में उन पर ढहाये जाने वाले जुल्मों का भण्डाफोड़ करते हुए लिखा–'जब हम उनसे मिलने गए तो उन्होंने फलौदी लोकपरिषद के प्रस्ताव पर हुई प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराया।

उन्होंने बताया कि सरकार ने समझा कि ये चीजें मेरे इशारे पर हुई हैं। फलतः वह मेरे प्रति नरमी के बजाय कठोरता से पेश आई। जिस दिन यह खबर छपी उसी दिन मेरे विरूद्व कुछ मुकदमों की सृष्टि कर दी गई। पहले मुझे पीटा गया और फिर छत से बांधकर मेरे गुप्तांगों में लाल मिर्च डाल दी गई।[23] जब जेल के अन्दर संदेहास्पद परिस्थितियों में गोपा जी की मृत्यु हो गई तो 'प्रजा सेवक' ने लिखा–जैसलमेर के राजबन्दी श्री सागरमल गोपा जेल में मार डाले गए। पांच वर्षों तक जेल में सड़ने वाले राजबन्दी का करूण अन्त। जैसलमेर में शहीद की लाश का जुलूस, जनता का क्रोध भड़क उठा।[24]

'प्रजा सेवक' ने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन एवं समाज सुधार की दिशा में भी प्रयास किए एवं इसके लिए निरंतर लेख प्रकाशित किए। पत्र ने पर्दा प्रथा त्यागने वाली महिला श्रीमती अकलदेवी मेहता के विचार, 'मैंने पर्दा कैसे उतारा' प्रकाशित कर स्त्रियों को पर्दा प्रथा के खिलाफ जागृत करने का प्रयास किया।[25] पत्र ने शूदखोरी की कुप्रथा का खुलकर विरोध करते हुए, 'इस प्रथा का अंत कब होगा' शीर्षक से तीक्ष्ण कटाक्ष इस तरह किया –'बणिया थारी बाण कोई नर जाणे नहीं, पाणी पीवे छाण, लोही अण छाणयो पीवे।'[26]

पत्र ने उदयपुर के दीवान के सत्कार्यों, सामाजिक कुरीतियां हटाने में उनकी दिलचस्पी एवं बाल विवाह रोकने के लिए प्रभावशाली कानून का निर्माण करने के समाचार प्रमुखता से दिए एवं इस तरह के प्रयासों की प्रशंसा की। पत्र ने स्त्री

शिक्षा को एक महान प्रयोग बताते हुए इस पर संपादकीय भी लिखे।[27]

'प्रजा सेवक' ने 'सामाजिक क्रांति का श्रीगणेश' शीर्षक से पर्दा प्रथा भंग करने वाले दंपतियों के चित्र एवं उनके परिचय के प्रकाशन का क्रम शुरू किया। पत्र ने सर्वप्रथम शिवराज जोशी 'सुमनेश' एवं उनकी पत्नी श्रीमती फूलदेवी का चित्र प्रकाशित किया जिन्होंने पर्दा प्रथा तोड़कर विवाह किया था।[28] भरतपुर के शासक बृजेन्द्र सिंह ने जब जातीय एवं प्रांतीय बंधन तोड़कर मैसूर की जय चामुंडी आम्मानी के साथ अंतरप्रांतीय एवं अंतप्रांतीय विवाह किया तब 'प्रजा सेवक' ने इसकी प्रशंसा की एवं उनके चित्र भी प्रकाशित किए।[29]

पत्र ने फलौदी में साठ वर्षीय वृद्ध की ग्यारह वर्षीया पुष्करणा ब्राह्मण कन्या से विवाह का तीव्र विरोध किया। 'प्रजा सेवक' ने शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों को सामाजिक कोढ़ बताते हुए इनके विरूद्ध भी अभियान चलाया।[30]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 'प्रजा सेवक' राजपूताने की रियासतों का सबसे पहला और सबसे अधिक प्रभावशाली पत्र था जिसने राजपूताना की रियासतों के जन आंदोलनों को आगे बढ़ाने के महत्वपूर्ण कार्य को अपने मुकाम तक पहुंचाया और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए एक वैचारिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

संदर्भ ग्रंथ

1 चौधरी, रामनारायण – वर्तमान राजस्थान, पृ. 57
2 प्रभाकर, मनोहर – राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता, पृ. 88
3 पंकज, विष्णु – राजस्थान के पत्र और पत्रकार, पृ. 181
4 राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा – अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, ग्रंथमाला–47, पृ. 10
5 प्रजा सेवक, 11 मार्च 1941
6 वही, 11 नवम्बर 1940
7 वही, 14 जनवरी 1941
8 वही, 26 जनवरी 1941
9 वही, 14 नवम्बर 1940
10 वही, 1 एवं 8 अप्रैल 1941
11 वही, 10 सितम्बर एवं 24 दिसम्बर 1941
12 वही, 3 सितम्बर, 22 अक्टूबर, 3 एवं 24 दिसम्बर 1941
13 वही, 21 मई 1941
14 वही
15 वही, 17 सितम्बर 1941
16 वही, 15 मार्च एवं 3 सितम्बर 1941
17 वही, 7 दिसम्बर 1941
18 वही, 3 एवं 16 अक्टूबर 1945
19 वही, 5 एवं 12 दिसम्बर 1945
20 वही, 16 जनवरी 1946
21 वही, 6 फरवरी 1946
22 वही, 8 मार्च 1946
23 वही, 23 मई 1945
24 वही, 11 अप्रैल 1946
25 वही, 12 नवम्बर 1940
26 वही, 10 दिसम्बर 1940
27 वही, 4 फरवरी एवं 18 मार्च 1941
28 वही, 8 अप्रैल 1941
29 वही, 16 जुलाई 1941
30 वही, 25 फरवरी 1941